International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण

प्रदीप देशवाल (हिन्दी विभाग)
म0नं0 383, ओल्ड हाऊसिंग
बोर्ड कालोनी, रोहतक

मनुष्य स्वभाव से ही सौंदर्यप्रेमी माना जाता है और प्रकृति अपने आप में सुंदरता का स्रोत है। मानव और प्रकृति का संबंध अनादि और चिरतन है। यह मान्यता प्रसिद्ध है कि मनुष्य को साहित्य सर्जन की प्रेरणा प्रकृति के रहस्यों को देखकर व जानकर ही प्राप्त हुई। विशेषतः कवि और साहित्यकार ने तो प्रकृति को माँ, प्रेमिका, उपदेशिकाय, पथ प्रदर्शिका, सुंदरी, अप्सरा, दैवी और पत्नी आदि न जाने कितने ही रूपों में देखा है। वैदिक साहित्य प्रकृति संबंधी ऋचाओं और सूक्तों से परिपूर्ण है। ऋग्वेद से प्रकृति चित्रण की सुदृढ़ परंपरा प्राप्त होती है। उस ग्रंथ में उषा, सूर्य, मरूत, इंद्र आदि को अलौकिक शक्तियों के रुप में, उनका मानवीकरण किया गया है। उदाहरणतः

''जल की बूँदों से प्रसन्न क्रीड़ामग्न मेंढक एक–दूसरे को बधाई देते
प्रतीत होते हैं।''

उषा की कल्पना एक कुमारी बाला के रुप में करते हुए सूर्य को उसका प्रेमी बताया है।

परवर्ती लौकिक संस्कृत काल का साहित्य भी प्रकृति–चित्रण सौंदर्य को अपने में समाये हुए है। कालीदास का 'मेघदूत' प्रकृति चित्रण संबंधी अजोड़ काव्य है। बाणभट्ट की 'कादंबरी' में भी प्रकृति चित्रण मनोहारी व मनमोहक है।

हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक युग आदिकाल में भले ही कविगण आलंबन और उद्दीपन के रुप में ही प्रकृति का आश्रय लेते हैं परंतु अवसर की उपलब्धता पर आदिकाल व भक्तिकाल तथा रीतिकालीन कवियों ने अपने प्रकृति प्रेम को अपने काव्य के माध्यम से

प्रकाशित किया है। प्रकृति ने कभी भी मानव का साथ नहीं छोड़ा तथा सुंदरता की प्रत्यक्ष मूर्त प्रकृति मानव तथा साहित्यकार के मन को मोहने में सदैव सफल रही है। अतः संपूर्ण हिन्दी साहित्य पर प्रकृति सौंदर्य की छवि विशेषतः काव्य में स्पष्ट झलकती है।

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) में प्रकृति चित्रण

हिन्दी के प्रारंभिक काव्य में वीरगाथाएँ भरी पड़ी हैं। इसलिए प्रकृति का चित्रण केवल कुछ ही रुपों जैसे उद्दीपन एवं उपमान में हुआ है। रासो ग्रंथों के रचयिताओ ंने जहाँ सौंदर्य–निरूपण के लिए प्रकृति के उपमान ग्रहण किये हैं, वहीं संयोग–वियोग की अनुभूतियों के उद्दीपन के रुप में विभिन्न ऋतुओं का वर्णन किया है।

'पृथ्वीराज रासो' में प्रकृति सौंदर्य की छटा दर्शनीय है। 'बीसलदेव रासो' की नायिका की विरहाग्नि में भादो मास की वर्षा की झड़ियों से और उद्दीप्त हो उठती है –

''भादबऊ बरसई छइ मगहर गंभीर।
जल थल महीयल सहू भर्या नीर
× × × × × ×
सूनी सेज विदेश पिआ,
दोइ दुःख नाल्ह क्युं सइहणा जाई।''

– चंद बरदाई

मैथिल–कोकिल विद्यापति को नारी के रुप–वैभव को प्रकृति के अंगराग से सुसज्जित करने की कला में जैसी दक्षता प्राप्त है, वह किसी अन्य समकालीन कवि को नहीं मिली। यथा –

सुंदर वदन चारु अरु लोचन, काजर रंजति भेला।
कनक–कमल माझ काल भुजंगिनी, श्रीयुत खंजन खेला।।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

– विद्यापति

II. भक्तिकाल में प्रकृति चित्रण

भक्तिकाल के साहित्य में जायसी और तुलसीदास के काव्य में प्रकृति के प्रायः सभी रुपों के उन्मुक्त दर्शन होने लगते हैं। महाकवि मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी अमरकृति 'पद्मावत' में प्रकृति वर्णन को पूर्ण प्रश्रय दिया है।

''पिउ सौ कहेउ संदेसड़ा, हे भौरा/ हे काग।
सौ धनि बिरहे जरि मुई, तेहिक धुवाँ हम्ह लाग।।

– जायसी

तुलसीदास ने श्रीराम की सीताहरण के पश्चात् की मनोदशा को व्यक्त किया है। जिसमें राम कहते हैं –

''हे खग–मृग हे मधुकर स्नेनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी।''

III. रीतिकाल में प्रकृति–चित्रण

रीतिकाल में भी प्रकृति चित्रण मुख्यतः आलंबन रुप में ही हुआ है। पर बिहारी आदि की कविता में उसका उन्मुक्त सरस चित्रण भी देखा जा सकता है। केशव एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी गणना भक्तिकाल व रीतिकाल दोनों में ही की जाती है। उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति के संपूर्ण उपादानों का उल्लेख किया है। रीतिकालीन अधिकांश कवियों ने अपने मनोभावों को अलंकृत रुप प्रदान करने के लिए प्रकृति को ही आधार बनाया है।

IV. आधुनिक काल में प्रकृति चित्रण

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

आधुनिक युगीन हिन्दी काव्य में प्रकृति की छटा का चित्रण पर्याप्त सूक्ष्मता, सरसता एवं विशदता से हुआ है। विशेषत' छायावादी काव्य में कवि अपनी मनोभावना की अभिव्यक्ति के लिए प्रकृति के विभिन्न रुपों को ही आधार बनाता है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा आदि छायावादी, काव्य के आधार स्तंभ माने जाते हैं।

उदाहरण देखिए –

उषा सुनहले तीर बरसाती, जयलक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।।

– जयशंकर प्रसाद

'अज्ञेय' व माखनलाल चतुर्वेदी ने भी राष्ट्रएकता व प्रेम को दर्शाने के लिए प्रकृति को माध्यम बनाया। यथा –

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊ।।

× × × × × ×

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

– माखनलाल चतुर्वेदी

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाटी 'निराला' को प्रकृति चित्रण संबंधी विशेष सफलता प्राप्त होने के कारण 'सुकुमार कवि' कहा जाता है। उनके द्वारा संध्या सुंदरी का मनोहारी वर्णन देखें –

''रोमांचित सी लगती वसुधा,
आई जौ, गेहूँ में बाली।
अरहर सनई की सोने की,
किंकिनियाँ हैं शोभाशाली।।''

वे प्रकृति को ही सर्वस्व मानते थे। नागार्जुन, शिवमंगल सिंह 'सुमन', अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, सुमित्रानंदन पंत, माखनलाल चतुर्वेदी, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, उमाशंकर जोशी, आलोक धन्वा, गजानन माधव मुक्तिबोध, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि आधुनिक काल

के वे प्रसिद्ध कवि/कवयित्री हैं, जिनके काव्य में / गद्य में उन्होंने प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है।

देश, नगर, बन, बाग, गिरि, आश्रम, सरिता, ताल, रवि, ससि,
सागर, भूमि के भूषन, रितु सबकाल

– केशव

अतः स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य के विकास में प्रकृति सोंदर्य की जो छाप साहित्यकारों पर पड़ी वह अद्वितीय साहित्य की रचना में 'मील का पत्थर' है। विश्व के प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य से आधुनिक साहित्य तक संपूर्ण हिन्दी साहित्य में, विशेष रूप से काव्य जगत में, प्रकृति ने साहित्यकारों का ध्यान आकृष्ट किया है और इन्होंने अपने साहित्य में प्रकृति के विभिन्न रुपों को सूक्ष्मता से परिष्कृत व परिमार्जित रुप में पेश किया है। द प्रकृति सौंदर्य के ही कारण न केवल हिंदी साहित्य वरन् सभी भाषाओं के साहित्य का विषय क्षेत्र विस्तृत हुआ है। अतः प्रकृति के उपादानों का साहित्य के विकास को चरमोत्कर्ष स्तर उपलब्ध करवाने में अभूतपूर्व योगदान है। शायद इसीलिए प्रकृति के 'ब्रह्मांड' भी कहा जाता है।

सन्दर्भ

(1) सुमनराजे, ''काव्यरुप संरचना उद्‌भव और विकास'', पृ0 225

(2) उपेन्द्र, ''पंत का काव्य'', पृ0 19

(3) शिवपाल सिंह ''पंत का काव्यशिल्प'', पृ0 170

(4) **NCERT** की पुस्तक **(VI - X)**

(5) तुलसीदास (बालकांड)

(6) ऋग्वेद साहित्य में प्रकृति चित्रण के उदाहरण, पृ0 203